Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य और कृत्रिम मेधा का अंतर्संबंध

प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे*
हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री योगानंद स्वामी कला महाविद्यालय, वसमत जी हिंगोली

शोध सार

साहित्य में मनुष्य के विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति होती है। मनुष्य समाज जीवन में जो अनुभूति होती है वह उसके साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। वर्तमान समय को विज्ञान का युग कहा जाता है। विज्ञान ने विभिन्न क्षेत्रों में आविष्कार करते हुए मनुष्य को सुख सुविधाएं पहुंचाने का सफल प्रयास किया है। अतीत का मनुष्य श्रम करते हुए वस्तु और सेवाओं का आवंटन करता था। एक वस्तु की निर्मिती के लिए पांच लोग लगते थे। आज कृत्रिम मेधा ने मनुष्य के कष्ट तथा यातनाओं को देखते हुए अधिक आसान कार्य किया है। जहां दस लोगों की जरूरत पड़ती थी वहां कृत्रिम मेधा के युग में केवल एक ही व्यक्ति वह कार्य आसानी से कर रहा है। आज मनुष्य कम श्रम करते हुए अधिक से अधिक वस्तुओं को आवंटित करना चाहता है। वैज्ञानिक युग में मनुष्य मशीनों के जरिए अपनी मर्यादित आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश में लगा हुआ है। आज किसी के पास भी एक दूसरे के साथ पारिवारिक सुख दुखों के संवाद करने के लिए समय नहीं है। आज भौतिकता के पीछे हर कोई व्यक्ति अपने रिश्तों को भूलकर लगा हुआ है। कृत्रिम मेधा के माध्यम से व्यक्ति कम से कम श्रम करते हुए अधिकतम पूंजि कमाना चाहता है। हिंदी साहित्य और कृत्रिम मेधा का संबंध दिन-ब-दिन गहराता जा रहा है। जहां हिंदी साहित्य की विविध विधाओं का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए सहायक सिद्ध हो रहा है। कृत्रिम मेधा मौलिकता, प्रामाणिकता और मानवीय स्पर्श जैसे नैतिक, सांस्कृतिक चुनौतियां भी पेश करता है, जिसे साहित्य के क्षेत्र में 'कृत्रिम मेधा' अनिवार्य सहायक उपकरण बन रहा है।.

बीज शब्द : *साहित्य, मनुष्य, अभिव्यक्ति, अनुभूति, विज्ञान, कृत्रिम मेधा,*

Received: 09/12/2025
Accepted: 22/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
Name: प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे
Email:dggade67@gmail.com

मेधा: अर्थ तथा परिभाषा :

कृत्रिम मेधा का लक्ष्य 'स्व'-शिक्षक प्रणाली बनाना है, जो डाटा से अर्थ प्राप्त करती है। 'कृत्रिम मेधा' का अर्थ ऐसी मशीन है या कंप्यूटर सिस्टम बनाना जो मानव जैसी सोच, समझ, निर्णय लेने की क्षमता का समाधान करने की क्षमता रखता हो।"१ अर्थात इसमें कृत्रिम मेधा में मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति की हुई नजर आती है। "कृत्रिम मेधा का उद्देश्य मानव बुद्धि की नकल करना और उसकी क्षमता को बढ़ाना होता है।"२ अर्थात कृत्रिम मेधा उस ज्ञान को मानव समान तरीकों से नई समस्याओं को हल करने के लिए लागू कर सकता है।

वर्तमान समय में 'कृत्रिम मेधा' समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन का माध्यम बन रही है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। साहित्यिक सृजन, अनुवाद, आलोचना, शोध, संरक्षण और अभी लेखन जैसे विविध क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

१. अनुवाद:

हिंदी साहित्य में विभिन्न भाषाओं की रचनाओं का अनुवाद होता है। साथ ही हिंदी भाषा में लिखित रचनाओं का भी विश्व की अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। स्रोत भाषा में लिखित साहित्य का अनुवाद लक्ष्य भाषा में करते समय मनुष्य की ओर से बहुत सारी गलतियां होने की संभावना हो सकती है, परंतु अब कृत्रिम मेधा एक ऐसा वैज्ञानिक साधन हमारे पास उपलब्ध हो चुका है जिससे एक भाषा में लिखित कहानी, कविता, नाटक का अनुवाद दूसरी भाषा में आसानी से तथा विश्वसनीय रूप में किया जाता है। कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य की किसी भी विधा की रचना को वैश्विक मंच तक पहुंचाने और अन्य भाषाओं से हिंदी भाषा में अनुवाद करने में सहायक है। जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रचार एवं प्रसार हो जाएगा। अनुवाद यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। भारत की विभिन्न भाषाओं का साहित्य हिंदी में तथा हिंदी का साहित्य भारत की विभिन्न भाषाओं में अनुवादित बड़ी मात्रा में हो चुका है।

२. रचनात्मकता:

हिंदी साहित्य की किसी भी विधा में साहित्य लेखन कृत्रिम मेधा

की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती जा रही है। वर्तमान में 'चाट जी पी टी'और अन्य जेनरेटिव कृत्रिम मेधा टूल्स कविता, कहानी और निबंध लेखन में नए विषयों और शैलियों का सृजन कर रहे हैं, जिससे साहित्यिक सृजन में नवीनता और विविधता आ रही है। अध्ययन अध्यापन की प्रक्रिया में कृत्रिम मेधा एक प्रभावशाली साधन के रूप में उभरा है। वर्तमान छात्रों को रचनात्मक लेखन की तकनीक सीखने और लेखक की अभिव्यक्ति को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

३. भाषा विकास और संरक्षण:

भाषा मानव सभ्यता की आधारशिला है। यह न केवल संप्रेषण का माध्यम है बल्कि, हमारी भारतीय संस्कृति, परंपरा और ज्ञान की वाहक भी है। समय के साथ भाषा का विकास होता है और साथ ही उसका संरक्षण भी आवश्यक हो जाता है, ताकि उसकी मौलिकता और पहचान बनी रहे। भाषा विकास का तात्पर्य नए शब्दों का निर्माण, अर्थों में परिवर्तन और उसका विस्तार साथ ही बोलियों का मानकीकरण करना, नई विधाओं और शैलियों का उद्भव करना आदि हिंदी भाषा के विकास में उस भाषा में लिखित साहित्यिक रचनाएं जिसमें कहानी, कविता, नाटक ,उपन्यास, आत्मकथा आदि उसे भाषा को सौंदर्य प्रदान करते हैं। मीडिया और तकनीकी भाषा भी हिंदी भाषा के विकास में अहम भूमिका निभा रही है।

४. अनुसंधान और विश्लेषण:

हिंदी साहित्य में अनुसंधान की प्रक्रिया निरंतर प्रवाहित होती है। हिंदी साहित्य केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि एक सशक्त अनुसंधान परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। साहित्यिक अनुसंधान के माध्यम से हिंदी भाषा समाज, संस्कृति और विचारधाराओं का वैज्ञानिक एवं तकनीकी अध्ययन किया जाता है। इसमें काथात्मक साहित्य, नाटक और रंगमंच, भाषा विज्ञान और लोक विज्ञान लोक साहित्य और जनजातीय साहित्य, संत साहित्य तथा आधुनिक समकालीन साहित्य पर अनुसंधान करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। इस अध्ययन में अनुसंधान की जो ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय ,मनोवैज्ञानिक, तुलनात्मक विश्लेषणनात्मक पद्धतियों की भी सहायता ली जाती है। इससे साहित्यिक जगत का संरक्षण नई दृष्टिकोण का विकास तथा हिंदी साहित्य तथा साहित्य को वैश्विक संदर्भ में स्थापित किया जा सकता है।

५. अनुभूति में सहायक:

कृत्रिम मेधा और लेखक की अनुभूति का संबंध परस्पर पूरक है। लेखक रचना का सर्जन करने में अनुभूति प्रदान करता है और कृत्रिम मेधा उसे अभिव्यक्ति प्रदान करती है। इस संतुलित सहयोग से साहित्य अधिक प्रभावशाली, व्यापक और समकालीन बन सकता है। लेखन साहित्य का सृजन करते हुए अपने जीवनानुभव, संवेदना, सामाजिक चेतना और कल्पनाशीलता डालकर उसमें सौंदर्य निर्माण करता है। यही लेखक की अनुभूति साहित्य को आत्मा प्रदान करती है। लेखक को कृत्रिम मेधा एक सहायता प्रदान करते हुए लेखक के विचारों को भाषा में डालने में सहायता प्रदान करती है तथा शब्द चयन, वाक्य विलास और शैली सुधार विषय से संबंधित संदर्भ और सामग्री उपलब्ध कराना आदि बातों में सहायक सिद्ध होता है।

उपसंहार:

इस प्रकार कृत्रिम मेधा और हिंदी साहित्य का संबंध समकालीन युग में नए साहित्य विमर्श को जन्म देता है। जहा हिंदी साहित्य मानवीय अनुभूति, संवेदना और सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति है। वही कृत्रिम मेधा तकनीकी बुद्धि के माध्यम से भाषा, पाठ और ज्ञान का विश्लेषण एवं प्रसंस्करण करती है। दोनों के समन्वय से साहित्य के क्षेत्र में नई संभावनाएं उभर रही है। हिंदी साहित्य और कृत्रिम मेधा का संबंध विरोधात्मक नहीं है बल्कि, सहयोगात्मक है। कृत्रिम मेधा साहित्य की सहायक संरक्षक और विश्लेषक बन सकती है, पर साहित्य की आत्मा मानवीय अनुभूति लेखक के पास ही रहती है। संतुलित उपयोग से ही हिंदी साहित्य अधिक व्यापक, समृद्ध और भविष्यगामी बन सकता है।

संदर्भ :

१.सं. डॉ संतोष येरावार- साहित्य कलश तथा व्यवहारिक हिंदी- पृष्ठ -142

२. वहीं - पृष्ठ -142

3. डॉ रमेश शर्मा- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनात्मकता (2023)

4. डॉ रामविलास शर्मा- आधुनिक हिंदी साहित्य और तकनीक

5. डॉ रामदरश मिश्र- हिंदी साहित्य का नया परिदृश्य

© The Author
This is an open-access article distributed under the Creative Commons Attribution License (CC BY).